शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 16 | उदयपुर गुरूवार 01 सितम्बर 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सवा माह के लिए शिव-पार्वती का धरती पर आगमन

-डॉ. तुक्तक भानावत-

'गवरी में सब काल और समय का समायोजन मिलता है। पौराणिक, ऐतिहासिक तथा वर्तमान की जीवनधर्मिता का अनूठा संगम, लौकिक, अलौकिक स्वांग-दर-स्वांग, दृश्य-दर-दृश्य अपने कथन-संवाद, गीत-गाथा, हास्य-विनोद, वार्ता-बोल और दक्कड़-झक्कड़ सब मिलकर उसे एक परिमार्जित आदिम-गंधी खेल-स्वांग, प्रहसन-प्रदर्शन तथा लीला-रूपक का संवर्धन देते हैं। देव-दानव तथा जल-नभ-थल के चर जीवों का ऐसा रचाव विश्व में शायद ही कहीं अन्यत्र देखने को मिलेगा।'

-डॉ. महेन्द्र भानावत

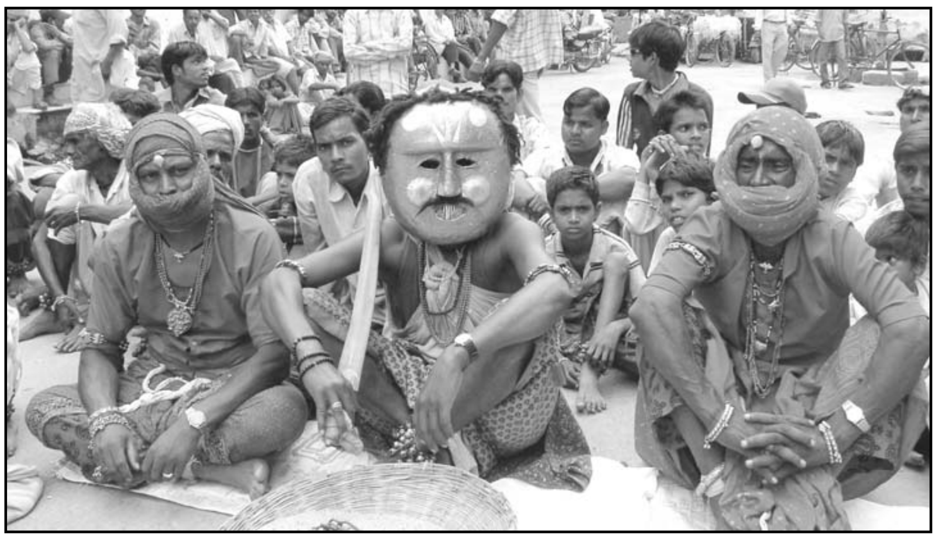

आदिवासी भील जाति उदयपुर जिले में बहुतायत से दिखने को मिलती है। इस जाति में गवरी नामक नृत्यानुष्ठान सैंकड़ों बरसों से मनता आ रहा है। इसके सूत्र पुराणों में भी मिलते हैं। गवरी में जो कथा-गाथाएं सुनने को मिलती हैं उनके अनुसार पार्वती धरती पर आती है और धरती पुत्रों को खुशहाली और अमन चैन देकर विदा हो जाती है। पहली गवरी का मंचन ठंडी राखी पर उदयपुर से 11 किलोमीटर दूर अमरखजी के प्रसिद्ध मेले से शुरू हुआ। इस मेले में सैंकड़ों की संख्या में आदिवासी स्त्री-पुरूष एकत्र होते हैं।

गवरी अध्येता डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार गवरज्या भीलों की प्रमुख देवी है। यह देवी इनके कल्याण तथा मंगल-मांगल्य की प्रदात्री है जो सभी प्रकार के संकटों-विकटों, रगड़ों-झगड़ों तथा दुख: दर्दों से इनकी रक्षा करती है। इसी देवी की आराधना में ये लोग गवरी धारण करते हैं। सुकाल होने पर भील लोग देवी की शरण में जाकर गवरी लेने की इच्छा व्यक्त करते हैं। देवी इनकी भावनाओं के अनुरूप गवरी लेने की इजाजत देती है तब गांव के प्रति घर से एक-एक व्यक्ति गवरी में भाग ले कर सवा माह तक पूरे संयम के साथ गवरी में अभिनय करने निकल जाता है।

इस दौरान सभी गवरी खेलने वाले एक समय भोजन करते हैं। नहाते नहीं हैं। हरी सब्जी का त्याग किये रहते हैं। पांव में जूते नहीं पहनते हैं। मांस-मदिरा पान नहीं करते हैं। आंगन पर सोते हैं। हर समय जो कलाकार जिस पात्र का अभिनय करता है वह उसी की पोशाक पहने रहता है। विश्व में ऐसा स्वांग-लीलापरक रूप अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलेगा। एक गवरी में कम से कम भी 30-40 कलाकार होते ही हैं। गवरी का प्रदर्शन जहां भी चौराहा या खुला स्थान होता है वहां शुरू हो जाता है। यह खेल प्रात: से सायंकाल तक चलता रहता है। इसमें आठ वर्ष से लेकर 80 वर्ष तक के आदिवासी भाग लेते हैं।

गवरी का मूल कथानक शिव-भस्मासुर से सम्बंधित है। इसका नायक राईबुड़िया है जो शिव तथा भस्मासुर का रूप लिए है। जहां इसकी जटा तथा भगवा पहनावा शिवजी का प्रतीक है वहां हाथ का कड़ा तथा मुखौटा भस्मासुर का द्योतक है। इसकी नायिका राई कहलाती है। ये संख्या में दो हैं। दोनों शिव पत्नियां हैं जो शक्ति और पार्वती का प्रतिनिधित्व लिये हुए हैं। गवरी के पात्र शिवजी के गण हैं जो खेल्ये कहलाते हैं।

नायक राईबुड़िया महादेव शिव है। यह भीलों का जंवाई है। गवरज्या अर्थात पार्वती भीलों की बहन बेटी है। कैलाश पर्वत से पार्वती अपने पीहर मृत्यु लोक में मिलने आती है। गवरी खेलने के बहाने सवा माह तक अलग-अलग गांव में वह सबसे मिलती है। समय पूरा होने पर आदिवासी हाथी की सवारी के साथ पार्वती को विदा करते हैं। नायक बुड़िया पूरी गवरी का संचालन करता है। यह गवरी की सीधी गम्मत में नहीं चल कर उसके बाहर-बाहर उल्टे पांव पीछे हटता हुआ गवरी को अनुशासित करता चलता है। राइयां लाल घाघरा, चूनरी, चोली तथा चूड़ा पहने होती हैं। इनका चेहरा कपड़े से बंधा रहता है जो पुरूष के दाढ़ी-मूंछ वाले मर्दानेपन को ढके रखता है। गवरी में सभी पुरूष कलाकार ही होते हैं। महिला पात्रों की भूमिका पुरूष ही निभाते हैं।

गवरी के मुख्य खेलों में बणजारा, हठिया, कालका, कानगूजरी, शंकरिया, कालू कीर, गोमा, चपल्याचोर, देवीअंबाव, खेतुड़ी जैसे कई खेल बड़े मनोरंजक होते हैं। शिव आदि देव हैं। इन्हीं से सृष्टि बनी। अपनी कला से शिवजी ने धरती आकाश पाताल पेड़ पौधे तथा जीव जंतु पैदा किये। भीलों के अनुसार पृथ्वी पर पहला पेड़ बड़ अर्थात वट वृक्ष सातवें पाताल से लाया गया। देवी अंबाव और उसकी सहेली अन्य देवियों के साथ यह वृक्ष लाया गया और पहली बार उदयपुर के पास प्रसिद्ध रणक्षेत्र हल्दीघाटी के ऊनवा गांव की चट्टान पर स्थापित किया गया। गवरी में जो लंबी गाथा मिलती है उसमें यह सारा वर्णन मिलता है। राईबुड़िया के रूप में देवों में देव महादेव शिव भेष बदलकर मृत्युलोक में आते हैं और गवरी के नायक के रूप में भाग लेते हैं। इनके साथ शिवजी के गण के रूप में भील अभिनेता भांति-भांति के स्वांग लाकर राह चलते दर्शकों का खासा मनोरंजन करते हैं।

गवरी के संबंध में विशेष ज्ञातव्य :

गवरी पर सर्वप्रथम एवं सर्वाधिक रूप में डॉ. महेन्द्र भानावत ने शोधात्मक सर्वेक्षण, अध्ययन एवं विश्लेषण किया। उदयपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 1967 के प्रथम दीक्षांत समारोह में उन्हें पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। गाईड थे डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' और परीक्षक बने हिन्दी महारथी डॉ. सत्येन्द्र (जयपुर) तथा नगेन्द्र (दिल्ली)।

गवरी विषयक शोधग्रंथ के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में डॉ. भानावत द्वारा लिखित 50 से अधिक आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। पाठ्यपुस्तकों में पाठ के रूप में भी गवरी पढ़ाई जाती रही। दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों, देश-विदेश के विभिन्न अध्येताओं तथा शोधकों द्वारा उनके माध्यम से गवरी का प्रदर्शनकारी स्वरूप, भीली जीवन की आस्था एवं अनुष्ठान की जीवनधर्मिता के लोकपक्षीय स्वरूप तथा विश्व परिदृश्य में सर्वथा अनूठे इस एकमात्र स्वरूप को लेकर निरंतर अध्ययन के सोपान रहे। कलामंडल के कार्यकर्ताओं द्वारा गवरी नाटिका की मंचीय प्रस्तुति भी देश के विभिन्न प्रांतों में दी गई। यूनेस्को ने गवरी नृत्य को सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्रदान की है।

आदिवासी गवरी उत्सव कार्यशाला का आयोजन टीआरआई, उदयपुर द्वारा उसके निदेशक डॉ. एन.एन. व्यास द्वारा 12 से 14 नवंबर 1986 को किया गया। इसका उद्घाटन छोटी ऊंदरी निवासी वयोवृद्ध भील नाथूबा ने दीप प्रज्वलित कर किया। अध्यक्षता संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष मंगल सक्सेना ने की। स्वागताध्यक्ष जनजाति विकास विभाग के आयुक्त रोहित आर. ब्राण्डन थे। मुख्य अतिथि के रूप में कोमल कोठारी तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में भारतीय लोककला मंडल के निदेशक डॉ. महेन्द्र भानावत ने भाग लिया।

बाहर से आमंत्रित विद्वानों में डॉ. विद्याविन्दुसिंह (लखनऊ), डॉ. मालती शर्मा (पूना), शंकरसेन गुप्त (कलकत्ता) प्रमुख थे। स्थानीय विद्वानों में डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी, डॉ. हरीश, रूपसिंह भील, दयाराम भील तथा गवरी मुखिया बागाजी, धन्नाजी आदि थे। कार्यशाला का सफल संचालन प्रवक्ता श्रीमती अनिता ब्राण्डन ने किया। कार्यशाला के प्रारंभ में गवरी मुखियाओं को धोती, अंगरखी तथा पाग, दुपट्टा भेंटकर स्वागत किया गया और उद्घाटन के पश्चात गवरी का मंचन रखा गया।

स्मृतियों के शिखर (15) : डॉ. महेन्द्र भानावत

हिन्दी सेवी क्षेमचन्द्र 'सुमन'

हिंदी साहित्य में 'सुमन' उपनामधारी दो महारथी हुए। एक शिवमंगलसिंह 'सुमन' तथा दूसरे क्षेमचन्द्र 'सुमन'। शिवमंगलसिंह 'सुमन' से राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा ख्यात उपन्यासकार पन्नालाल पटेल के सम्मान समारोह में डॉ. प्रकाश 'आतुर' ने मिलवाया। क्षेमचन्द्र 'सुमन' से मेरा कभी मिलना नहीं हुआ यद्यपि उनके नाम से तो प्रथम वर्ष में पढ़ता था, तभी से परिचित हो गया था। उनका अति महत्व का काम दिवंगत हिंदी सेवियों के संबंध में जानकारी देने का था। इसी आशय के मेरे पास उनके सन् 1980 से लेकर 1992 के बीच लिखे गये पत्र हैं। इनमें सभी पोस्टकार्ड हैं। अपवाद स्वरूप एक पत्र है जो मेरे द्वारा भेजी अपनी पुस्तक 'जिन्हें मैं जानता हूं' के बारे में समीक्षात्मक टिप्पणी का है।

सुमनजी ने मुझसे उदयपुर से संबंधित दिवंगत हिंदी सेवियों के बारे में जानकारी चाही थी। मैंने उनको देवीलाल सामर, प्रकाश 'आतुर' तथा सुधा गुप्ता आदि का परिचय भेजा। परिचय के साथ उन्होंने चित्र भी चाहे थे। निधन तिथि भी चाही। मुझे लगा कि वे हर चीज का बड़ी बारीकी से अध्ययन कर उसे संवारते हैं और तत्काल लिखे पत्र के माध्यम से जानकारी को समृद्ध करते हैं। उनमें कहीं उतावलापन नहीं है और न किसी चीज की प्राप्ति के लिए जोर जबर्दस्ती का भाव है। साहित्य में ऐसे लोग हुए हैं जो किसी चीज की प्राप्ति के लिए नाक में दम किये रहते थे। सामनेवाले की परिस्थिति और सामर्थ्य की चिंता किये बगैर अपनी ढपली अपनी राग अलापते रहे और अपनी घोड़ी छाया बांधने का ही सुख बटोरते रहे।

सुमनजी द्वारा जानकारी प्राप्त करने का कौशल देखिए उन पत्रों में जो उन्होंने मुझे लिख भेजे-

(1) स्व. श्री सामरजी का चित्र और परिचय की रूपरेखा मिली। परिचय में जन्म स्थान और पुस्तकों का उल्लेख नहीं है। क्या सूचित करने की कृपा कर सकेंगे? आभार मानूंगा। (पोस्टकार्ड, 1 फरवरी 1982)

(2) स्व. सुधा गुप्ता का चित्र और परिचय मिला। आभारी हूं। इस परिचय में उनकी जन्म तिथि और जन्म स्थान का उल्लेख नहीं है। कृपया सूचित करें। 'जिन्हें मैं जानता हूं' आपकी कृति को देखने का सौभाग्य मुझे नहीं मिल सका। वह कहां से उपलब्ध हो सकेगी? उत्तरप्रदेश सरकार से पुस्तक और सम्मानित होने पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। क्या प्रकाश 'आतुर' का वह मोनोग्राम भी भेज सकेंगे ? (पोस्टकार्ड 16 जुलाई 1988)

(3) यदि स्व. प्रकाश 'आतुर' का चित्र और परिचय भेज सकें तो कृपा होगी। (पोस्टकार्ड, 2 नवंबर 1989)

(4) स्व. श्री आतुरजी की निधन तिथि की सूचना मिली। श्री रावत सारस्वत की सामग्री तथा चित्र भी भेजने की कृपा करें। (पोस्टकार्ड, 30 जनवरी 1990)

(5) 'जय राजस्थान' की कटिंग मिली। ऐसा ही स्नेहभाव सदा बनाये रहें। (पोस्टकार्ड, 25 जनवरी 1991)

दैनिक 'जय राजस्थान' का प्रकाशन उदयपुर से था। संभाग का यह प्रथम दैनिक था जिसमें मैं 'चलते-चलते' नाम से हर रविवार को स्तंभ लिखता था। यह स्तंभ मैंने लगातार 25 वर्षों तक लिखा। इसमें मेवाड़ के कई साहित्यकारों के बारे में भी लिखा। सुमनजी को समय-समय पर उस लेखन की कटिंग भी भेजी। यही नहीं, उन्हें 'सुलगते प्रश्न' साप्ताहिक पत्र भी नियमित भेजा गया जिसका संपादन मैंने किया। एक पत्र में उन्होंने उसका भी उल्लेख किया- आपकी कृपा से 'सुलगते प्रश्न' मुझे नियमित रूप से मिल रहा है। थोड़े से में आप बहुत कुछ समेटने का जो प्रयास करते हैं, वह प्रशंसनीय है। सामयिक समस्याओं पर तीखी टिप्पणियां अच्छी लगती हैं। (पोस्टकार्ड, 22 जुलाई 1992)

मेरे लिए उनका लिखा सर्वाधिक महत्व का पत्र तो वही है जो उन्होंने मेरी पुस्तक 'जिन्हें मैं जानता हूं' पढ़कर लिखा। उससे मुझे अपने लेखन के संबंध में चिंतन मनन करने का अवसर हाथ लगा कारण कि प्रशंसापरक लिखनेवाले तो अनेक होते हैं पर सच एवं सही को उजागर कर ठीक ढंग से मार्गदर्शन करनेवाले प्राय: नहीं होते इसलिए वह पत्र मेरे लिए दिशाबोधक भी बना। यह पत्र मैं अविकल रूप में यहां दे रहा हूं।

दूरभाष : 2280206
अजय निवास,
जी 10, दिलशाद कोलोनी,
(पुरानी सीमापुरी के निकट),
शाहदरा, दिल्ली -110032

प्रिय भाई भानावतजी,

आपकी कृपा के परिणामस्वरूप आपकी कृति 'जिन्हें मैं जानता हूं' मुझे यथासमय मिल गई थी। इधर मैंने 2 दिन में इसका अद्यतन पारायण कर लिया। इसके प्राय: सभी आलेख रोचक, प्रेरक और ज्ञानवर्धक हैं। मुझे इंटरव्यू से अधिक संस्मरणात्मक प्रसंग अधिक हार्दिक और आत्मीय लगे। विशेष रूप से जनुभाई, प्रकाश 'आतुर', नंद चतुर्वेदी, नाहटाजी (अगरचंद), नरोत्तमदास स्वामी, सामरजी (देवीलाल), मेनारियाजी (मोतीलाल) आदि के। जहां आप प्रश्नावलियों में उलझे हैं वहीं वे अस्वाभाविक हो गये हैं। जहां आपने अपनी लेखनी को उन्मुक्त संस्मरणात्मक रखा है वहीं चरित्र नायक का व्यक्तित्व सर्वथा अनूठे रूप में पाठक के समक्ष मूर्तिमान हो उठता है। यही आपके लेखन की सार्थकता है। स्वामीजी के मौन को मुखर करने का आपने यद्यपि प्रयत्न तो किया है किंतु उसमें भी उनका व्यक्तित्व अपनी क्रियाशीलता प्रकट कर जाता है तो नाहटाजी की संग्रहवृत्ति, कंजूसी, काइयांपन भी उनके व्यक्तित्व को उजागर करता है। पांच हजार रूपये की कहानी की घटना को उनकी कंजूसी प्रवृत्ति ने किस प्रकार कम से कम राशि तक लाने को विवश किया, यह भी वे ही कर सकते थे।

प्रकाश 'आतुर' के चित्रण में आपने उनकी उच्चतम शिक्षा किस प्रकार संभव हो सकी, इस पर प्रकाश क्यों नहीं डाला? मेरे लिए यह रहस्य ही है। सत्येन्द्रजी के व्यक्तित्व की शुष्कता उनकी अपनी पहचान थी। जनुभाई ने अपने साहित्यकार पर बड़ा अत्याचार किया है। क्या उनका वह उपन्यास छपा है? उनमें कुछ अहंकारी तत्व भी यदा-कदा अपनी झलक दिखला जाते हैं। उसका उल्लेख रह गया है। सेठियाजी (कन्हैयालाल) का व्यक्ति-चित्रण और संस्मरण भी मुझे प्यारा लगा। करणा भील का संस्मरण तो मेरे जैसे व्यक्ति के लिए एक अद्भुत जानकारी दे गया है। दिनेश (डॉ. रामगोपाल शर्मा), व्यास (गोपालप्रसाद), जैनेन्द्र और बालकवि बैरागी के आलेख मुझे प्रभावकारी नहीं लगे। दिनेश और व्यास के विवरणों में तो आत्म स्थापन की भयंकर भावना दृष्टिगत होती है। क्षमा करेंगे, बहुत लिख डाला। स्पष्ट लेखन के लिए क्षमा चाहता हूं।

सस्नेह आपका
क्षेमचन्द्र 'सुमन'

कहना नहीं होगा कि सुमनजी दिवंगत हिन्दी सेवियों के प्रति उच्च आदर लिये थे। उनका कहना था कि देश के विभिन्न अंचलों में ऐसे अनेक हिंदीसेवी हुए हैं जिनका योगदान मूल्यवान रहा किंतु उन्हें कौन याद करेगा ! मुझे संतोष है कि मैंने यह बीड़ा उठाया ताकि उनका सम्मानपूर्वक लेखा हो सके और कभी कोई समय आयेगा जब कोई हिन्दी साहित्य का फिर नये ढंग से इतिहास लिखेगा तब उसके पन्नों में दिवंगत हिन्दी सेवियों के रूप में प्रतिष्ठापूर्वक परचम से परिचित हो पाठक गर्वित हो सकेंगे।

स्मृति शेष

नहीं रहे सबके प्रेमका राजू खेमका

तिनसुकिया के लोकप्रिय साहित्य संस्कृति तथा समाज के कर्मठ सेवी राजू खेमका असमय ही हमसे बिछुड़ गये। अपने पिताश्री राधाकृष्णजी खेमका की तरह वे भी असमिया जनजीवन में अपनी लोकप्रिय पैठ लिए थे।

कई संस्थाओं से उनका सक्रिय जुड़ाव रहा। मारवाड़ी सम्मेलन, दुर्गापूजा जैसे समारोह बड़े स्तर पर मनाते और राजस्थान से राजनेताओं, साहित्यकारों, कवियों तथा कलाकारों को आमंत्रित कर उन्हें सम्मानोपलब्धियों से नवाजा करते थे।

उन्होंने अनेक स्मारिकाओं तथा प्रकाशनों का संपादन किया। वे सम्मोहक, सौम्य, विनीत, कलारसिक, कवि एवं प्रखर वक्ता थे। राजनीति में भी उनकी जोरदार पकड़ रही। 28 अक्टूबर 1951 को

जन्मे राजू का 2 अगस्त 2016 को निधन हो गया। अपने पिता के नक्शे कदम पर श्रवण-पुत्र की तरह वे आजीवन ईमानदारी के साथ सार्वजनिक सेवक बने रहे। दस वर्ष तक विधानसभा के सदसय के रूप में राजनीति में वे आदर्श सिद्ध हुए।

मेरी उनसे कभी भेंट नहीं हुई किंतु उनके स्नेहशील सम्मानजनक पत्रों ने मुझे सदैव उनका बनाये रखा। अपने पत्रों में वे बड़े-बड़े नेताओं, रचनाकारों, साधु-संतों तथा कलाधर्मियों के सान्निध्य का जिक्र कर सदैव खुशहाल तथा धन्य भाग्य बने रहे।

उन्होंने लिखा भी - 'सन् 1966-67 के करीब जब मैं सार्वजनिक कार्यों में विशेष समय देने लगा तो पिताजी ने मुझे सलाह दी कि व्यावसायिक काम छोड़दो। यह तुम्हारे सार्वजनिक कार्यों के लिए बाधा बन सकता है। ईमानदारी के साथ तुम जनता की सेवा करो। व्यापार और परिवार का भार संभालने के लिए मैं ही काफी हूं। रुपयों का अभाव कभी महसूस न करना। जब जितनी जरूरत हो मांग लिया करना।' ऐसे 'यथा पिता तथा पुत्र' का चले जाना सबकी सार्वजनिक हानि है।

'शब्द रंजन' उनके पास नियमित पहुंचता रहा। वे लगभग हर अंक को पढ़कर लंबी बातचीत कर लिया करते थे। मुझे वे हर समय उल्लसित, स्नेही, यारबाज और दिल्लगी के दरियादिल ही लगे। हर क्षेत्र की बड़ी से बड़ी हस्तियों से उनका संपर्क और सान्निध्य अचरज देने वाला ही है।

-म.भा.

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

चित्तौड़ा को विशिष्ट प्रतिभा सम्मान

उदयपुर। शहर के मिनिएचर आर्टिस्ट चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को विज्ञान समिति के 58वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में विशिष्ट प्रतिभा सम्मान से नवाजा गया। चित्तौड़ा द्वारा सूक्ष्म कला के क्षेत्र में नवाचार करते हुए चावल के दाने, मोती, चॉकस्टिक आदि पर विभिन्न कलाकृतियां बनाने तथा सूक्ष्म पुस्तिकाओं में जीवन, संस्मरण आदि के संग्रहण करने यह सम्मान प्रदान किया गया।

समारोह के अतिथि प्रमुख शिक्षाविद् डॉ. के. एल. कोठारी, डॉ. एल. एल.धाकड़, डॉ. विनिता बोहरा, डॉ. के. एल. तोतावत सहित गणमान्य अतिथियों ने चित्तौड़ा को प्रमाणपत्र, शॉल भेंटकर सम्मानित किया।

कवि अनंत की कथा अनंता

-डॉ. शशिकर 'खटका राजस्थानी'-

खारी नदी के तट पर बसे बिजयनगर की सड़कों पर पैदल चलता हुआ यदि कोई खद्दरधारी वृद्ध दिखाई दे तो आप समझ सकते हैं कि वे स्वतंत्रता सेनानी कवि श्री कन्हैयालाल शर्मा 'अनंत' है। मेवाड़ के बनेड़ा ग्राम में कर्मकांडी सुखवाल ब्राह्मण परिवार में 14 अक्टूबर 1922 को उनका जन्म हुआ। वहां शिक्षा पूरी करने के पश्चात वे उच्च शिक्षा हेतु महाराणा भूपाल कॉलेज उदयपुर चले गये। उस समय देश में गांधीजी के आह्वान पर 'करो या मरो' का आंदोलन चल रहा था।

उदयपुर में रहते हुए वे माणिक्यलाल वर्मा, मोहनलाल सुखाड़िया, भूरेलाल बया के संपर्क में आये। प्रजामंडल के आयोजनों एवं प्रदर्शनों में सदैव आगे रहने लगे। उनके प्रभाव से वे अपने बचपन के साथी बनेड़ा के मणिराम नुवाल, उमरावसिंह ढाबरिया, कल्याणमल धाबाई, ललितशंकर लाड़, किस्तूरचंद मोची, सोहनलाल बल्दवा, सोहनलाल अग्रवाल, कन्हैयालाल तम्बोली के साथ भूदान यज्ञ के प्रणेता विनोबाजी के नेतृत्व में गांव-गांव घूमकर आजादी की अलख जगाने लगे। इन्हें देख उनके अनुज महेश, मानसिंह एवं रविशंकर जो बेरिस्टर की पढ़ाई कर रहे थे, वे भी यज्ञदत्त उपाध्याय मसूदा वालों के नेतृत्व में उनके साथ हो लिये। आजादी के बाद तीनों सफल बेरिस्टर बने। इनमें किस्तूरचंद एवं उमरावसिंह ढाबरिया राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी रहे।

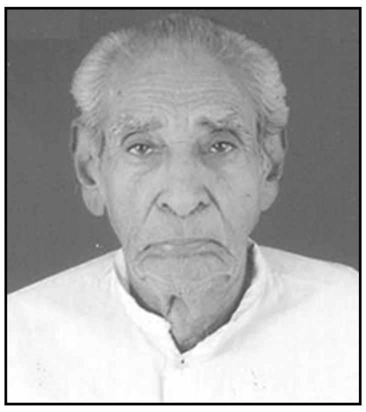

कवि अनंत आजादी के बाद राजकीय सेवा में प्रधानाचार्य पद पर रहते हुए भी सर्जनशील रहे। उनकी कविताएं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहीं। सेवानिवृत्ति के पश्चात उन्होंने समाज की पत्रिका 'जय श्रृंग' का संपादन किया। सन् 1987 में राजस्थान सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उन्हें सम्मानित किया। उनकी तीन काव्य-कृतियां नये चरण, राष्ट्र की पुकार एवं युग सृजन के स्वर प्रकाशित हो चुकी हैं। दो कृतियां ज्वाला और ज्योति एवं भगवद्गीता का हिंदी काव्यानुवाद प्रकाशनाधीन है।

नव प्रतिभाओं को सृजन की ओर उन्मुख करने के लिए बिजयनगर की साहित्यिक संस्था 'स्वर भरती' के वे वर्षों तक अध्यक्ष रहे। भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा को जाग्रत करने हेतु श्रीराम शर्मा द्वारा प्रेरित गायत्री परिवार के सक्रिय सदस्य रहते हुए भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अपना योग दिया। मेरवाड़ा खादी ग्रामोद्योग द्वारा संचालित साठ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का वर्षों तक सफल संचालन किया।

कवि अनंत उन शिक्षकों में नहीं हैं जो शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रखते हैं। उनकी दृष्टि में सच्ची शिक्षा वह है जो जीवन व्यवहार में फलित होकर व्यक्ति को समष्टि हित में प्रेरित करे। जो स्व को इतना विस्तार दे कि वह सर्व में परिणत हो जाये। छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल में उनके छात्र रहे प्रख्यात साहित्यसेवी डॉ. नरेन्द्र भानावत ने उनके लिए राष्ट्र की पुकार में लिखा- 'अनंतजी के लिए कविता शब्दों का वाग्विलास न होकर उन्मुक्त हृदय का उल्लास है। बैठे ठाले वाली बात उनके जीवन में कभी नहीं रही।'

अतिरिक्त निदेशक श्री भट्ट का अभिनन्दन

उदयपुर। सूचना एवं जनसंपर्क सेवा विभाग के अतिरिक्त निदेशक एवं राजस्थान सूचना केन्द्र, नई दिल्ली के प्रभारी गोपेन्द्रनाथ भट्ट को स्वाधीनता दिवस पर अजमेर में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह में उत्कृष्टतम सेवाओं के लिए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे द्वारा सम्मानित होने के उपलक्ष्य में उदयपुर संभाग के सूचना एवं जनसंपर्क विभागीय अधिकारियों तथा मीडिया प्रतिनिधियों ने अभिनंदन किया।

होटल उदयविलास में आयोजित समारोह में सूचना एवं जनसंपर्क विभागीय उप निदेशक डॉ. दीपक आचार्य (उदयपुर), सहायक निदेशक कमलेश शर्मा (डूंगरपुर), जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी श्रीमती कल्पना डिण्डोर (बांसवाड़ा) तथा उदयपुर के सहायक सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी पवन शर्मा एवं श्रीमती ऋतु सोढ़ी ने शॉल ओढ़ाकर उनका अभिनन्दन किया। इस अवसर पर मीडियाकर्मियों में डॉ. रवि शर्मा, कपिल श्रीमाली, मुकेश हिंगड़, ललित सोनी, प्रमोद सोनी, ऋषभ जैन, गीता सुनील, डॉ. तुक्तक भानावत, भूपेन्द्र चौबीसा, डॉ. मुनिश अरोड़ा, रामसिंह चदाणा, घनश्याम पालीवाल, वीरेन्द्र श्रीवास्तव, प्रकाश मेघवाल, भगवान प्रजापत, राहुल आचार्य उपस्थित थे।

वाद्य निर्माता मांगीलाल

-भेरुसिंह राव 'क्रांति'-

कानोड़ के मांगीलाल लुहार बाल्यकाल से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के रहे। अपने पिताजी को चड़स बनाने में सहयोग करते-करते मांगीलाल हारमोनियम, तम्बूरा चौतारा, सितारा, वीणा, ढोलक, तबला आदि वाद्य यंत्रों पर भजन गाते हुए उनकी कारीगरी की ओर आकृष्ट हुए। उनकी भागटूट ठीक करते-करते नये निर्माण की ओर प्रवृत्त हुए और इनके व्यवसायी बन गये। तारों की संख्या के आधार पर इनका इकतारा, तितारा (तम्बूरा) तथा चौतारा नाम पड़ा।

भजन मंडली में जहां-जहां भजन गाते वहां-वहां इनका संपर्क अन्यों से होता रहा। कई भजन गाने वाले तैयार हुए तो वाद्यों के बजाने वाले भी तैयार हुए। उनकी मरम्मत का काम तो मांगीलाल करते ही साथ ही नया वाद्य सस्ती दर पर बेचने को भी प्रेरित करते। कुछ ने अपने यहां इनकी बिक्री भी प्रारंभ कर दी। सबके लिए मांगीलाल वाद्य बनाकर बेचते। इनके बनाये वाद्य अन्यों से सस्ते ही नहीं, अच्छे तथा टिकाऊ भी होते। साथ ही ये बजाना भी सिखा देते। मृदुल व्यवहार होने के कारण इनकी पैठ जम गई।

प्रारंभ में जहां-जहां इनके भजनीक हैं वहां कानोड़ के आसपास के स्थानों को ही स्पर्श किया। जहां भजन मंडली जुड़ती तो ये आवश्यकता के अनुरूप अपने साथ वाद्य बनाकर भी ले जाते और किश्तों में भी उपलब्ध करा देते। कहीं कोई समस्या होती तो हाथोंहाथ उसका निराकरण कर देते। इससे इनकी दोनों स्तरों पर गायक तथा वाद्य निर्माता के रूप में साख बढ़ती गई।

मांगीलाल ने बताया कि कानोड़ के आसपास लसाड़िया, कालीभींत, पीपलवास, खेड़ी, आकोला, तलावां, सुरखण जैसे गांव तथा भीलवाड़ा, नाथद्वारा, उदयपुर, मावली जैसे नगरों में इनकी अच्छी पहुंच है। वाद्यों के

लिए आम, सेमल, हवन, बड़, बिआ, अडुसा, रोहीड़ा आदि लकड़ियां काम में ली जाती हैं जो कानोड़ के पास पीपलवास के जंगल में मिल जाती हैं। निर्माण में बसेला, चोरसी, बिजणी, फाइल, करौती, हथौड़ी, पिलार आदि औजार प्रयुक्त होते हैं। सूखे हुए तने को साइज व मोटाई के अनुसार काट कर खोखला बना भीतर से बारीक औजार से खुदाई करते हुए सभी सीरे से मोटाई आधा इंच से कम रखनी होती है ताकि वजन हल्का रहे। खुदाई पूर्ण होने पर इसके साथ नाल जोड़ी जाती है तथा ऊपर के भाग पर दो एमएम की मोटाई वाले वाटर प्रूफ प्लाई का कवर लगाया जाता है। नाल एवं पूरे बाहरी भाग पर सुंदरता के लिए डिजाइन खोदकर मनमोहक पालिश की जाती है।

वाद्य यंत्र के अनुसार जितने तार लगाने होते हैं उतने छेद ऊपरी भाग पर किये जाकर उनमें शीशम की लकड़ी के मोरणे (चाबी) बनाकर लगाये जाते हैं। इन मोरणों के तार बांधे जाते हैं। गोलाकार कुंडी के नीचे के भाग पर तारों द्वारा कंघीनुमा गजरा बनाया जाता है। उस गजरे में मोती अथवा बारीक नटें लगा दी जाती हैं जो ट्युनिंग के काम आती हैं। इन तारों को सहेजकर रखने के लिए गोड़ी लगाई जाती है। तम्बूरा बनाने में आठ-दस दिन का समय लगता है। पहले यह हजार-पन्द्रह सौ में बिकता था पर अब चार-पांच हजार तक पड़ता है। इकतारा तुम्बे को सूखाकर उसमें बांस की पाइप लगाकर एक तार व एक मोरणा लगाने से बनता है।

सत्संग सुगुणी व निर्गुणी संतों द्वारा आयोजित होते हैं। सगुण संतों में कृष्ण, मीरां, नामदेव, रामदेव, रैदास, रसखान, धन्ना जाट, नरसी मेहता, रूपादे, तोलादे आदि भजन गाये जाते हैं। निर्गुण संतों में कबीर, गोरखनाथ, कल्याण भारती, बावजी चतुरसिंह, गुमानसिंह, भूरीबाई, वनानाथ, आशा भारती के भजन गाये जाते हैं।

अब तक निमंत्रण पर जिन सत्संगों में सम्मिलित हुए और भजनों पर हारमोनियम, तम्बूरे आदि पर जो प्रस्तुति दी वे स्थल हैं- धुंधलमलजी स्वामी की धूणी (महंत श्री जीवनपुरीजी) बानसी, सरवाणिया मठ (महंत श्री माधुगिरीजी) केरपुरा, धूणीमाताजी (पुजारी श्री लोगर महाराज), केरेश्वर महादेव (पुजारी श्री रामचन्द्रजी, मांगीलालजी, कैलाशजी), हरि ओमानंद आश्रम सेक्टर 6, उदयपुर (महंत श्री मोहनानंदजी महाराज), अग्रेश्वर महादेव मंदिर माउण्ट आबू (महंत श्री तुलसीगिरीजी महाराज), अग्रेश्वर महादेव मंदिर सथाना कांकरोली (पुजारी श्री गणेशजी, किशनजी लुहार व वंशीदासजी वैष्णव), शनि महाराज मंदिर राजियावास कांकरोली (श्री कैलाशगिरीजी), लालमादड़ी (नाथूजी लुहार), नारामंगरा लोहार बावजी की धूणी, रणिया डूगा महाराज की धूणी, साथ ही पशुपतिनाथ मंदिर मंदसौर, सांवलियाजी, आशावरा माताजी, इडाणा माताजी, कालिका माताजी (भींडर), भजलेश्वर महादेव, वक्र भवानी माताजी (बड़वाई), बाबा रामदेव मंदिर, शनि महाराज मंदिर, गोरखनाथ मंदिर (कानोड़)तथा झाड़ोल, फलासिया, वागपुरा, मादड़ी, नाथद्वारा, छेला आम्बा। मांगीलाल को शनिदेव, सत्यनारायण, बाबा रामदेव, एकादशी आदि की कथाएं सुनाने के लिए भी बुलाया जाता है।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 सितम्बर 2016

राखी के बहाने हवा का रुख

हमारा देश आंचलिक संस्कृति की सम्मानोपलब्धि लिए है। यहां नाना अंचल हैं जो अपने अंचनों में अपनी भाषा संस्कृति साहित्य रहन-सहन शिल्प सरोकार अनुरंजन और जीवन-यापन में तौरतरीकों से विन्यासित हैं। आजादी के पूर्व का मेवाड़ अंचल, आज का उदयपुर संभाग अपने भिन्न मिजाज में अपनी पहचान लिए था। सामंती शासक के भोग-विलास की चरम सीमा के रहते यहां भी नाना प्रकार के हांसल-भोग आमजन की यातना के उत्कर्ष बने हुए थे। जिन्होंने भी ये सब देखा भोगा, वह पीढ़ी नहीं रही तो वह सीढ़ी भी नहीं रही।

लेकिन एक अच्छा पक्ष यह रहा कि तब जो सुखद परंपराएं और उनके साथ जीनेवाले लोक की आस्था-अनुष्ठान, जीवन-चर्या, त्यौहार-उत्सव, विविध-संस्कार और राग-रंगमूलक जो परिवेश सबको सुख आनंद और उल्लास की डोर में एकनिष्ठ किये था वह आजादी के बाद धूमिल पड़ गया। नाचने, गाने, बजाने वाली कलात्मक जातियों के पास जो सर्वसुखी विरासत और धरोहर की धर्मनिष्ठा पुण्यशालिनी गंगोद्भवी सलिलाएं थीं वे बासंती परिधान छोड़ विसंगति कुंडलियां बन गई।

राखी का त्यौहार सभी मनाते थे। भाई-बहिन ही एक-दूसरे को राखी नहीं बांधते, बेटा अपनी मां के भी राखी बांधता था। घर में पल रहे परण दुधारु जानवर से लेकर घर के गुजारे से जुड़े बैल, ऊंट, घोड़ा, पोटी को भी राखी बांधी जाती थी। यहां तक कि घर-आंगन में उग रहे वृक्ष, पौधों, बेल तथा निवास स्थल ओवरा, मेड़ी तथा चूल्हा-चकलोटा, छलनी-सूपड़ा, कलम-दवात एवं रोड़ी तक को राखी से गृहरत्न बनाया जाता था।

वह अंचल जहां की पगडंडी की पहुंच भी उबड़खाबड़ और पगमोचन देनेवाली थी, आज तो अकल्पनीय दास्तानों की दस्तावेज बनी हुई है। वह अंचल ही अब अंतर्राष्ट्रीय अलख देने वाला हो गया है। समय का चक्र एक सा नहीं रहता। आज का युवा आगे देख रहा है तो वृद्ध अतीत में व्यतीत किये समय की स्मृति से खुशहाल बना हुआ है और दोनों के बीच का प्रौढ़ अपनी भुजाएं फैला वर्तमान के अर्थमान के साथ खड़ा है। दोनों ओर की हिलोरों के बीच हिंडोला में बैठा हवा का रुख देख रहा है।

पत्र-पिटारी

उत्तम सामग्री से लकदक, विज्ञापन तक व्यंजनापूर्ण

'शब्द रंजन' का बाह्य कलेवर भले ही सरल, सीधा, सादा और तड़क-भड़क से रहित हो परन्तु उसकी सामग्री अर्थपूर्ण तथा किसी एक स्तर की है जो आजकल देखने में कम आती है। श्री रतनलाल जोशी किसी समय नवजीवन और दैनिक हिन्दुस्तान के संपादक थे। हिन्दुस्तान में वे एक ही संपादकीय लिखते थे जो सप्ताह में एक ही बार प्रकाशित होता था परन्तु वह प्रत्येक संपादकीय किसी थीसिस से कम नहीं होता था। शब्द रंजन के भूले भटके बिखरे पन्नों में जो ठोस सामग्री होती है वही तो संपादक की पूंजी, क्षमता और महत्ता होती है।

अंक दस के मुखपृष्ठ की 'कोनी कोरो नांव रेत रो हळदीघाटी' कविता ने श्री कन्हैयालाल सेठिया की 'पातल-पीथल' कविता की याद दिला दी। नाथूसिंहजी महियारिया के प्रतापी सोरठों में बिहारी के दोहों सा अलंकारत्व झलकता है। सच्चे और सहज जीवन के सारथी श्री विष्णु प्रभाकरजी के पत्रों का संकलन प्रेरणास्पद है। 11वें अंक के मुखपृष्ठ की सामग्री राजनैतिक पृष्ठभूमि को छूते हुए भी उससे अलग होकर जन संवर्द्धन की दृष्टि से उत्तम है। कुल मिलाकर भीतर की सामग्री दुलर्भ सी है क्योंकि ऐसी बातें अन्यत्र पढ़ने को नहीं मिलती हैं।

आकाश छोटा हो गया है, निर्लज्जता बिखर रही है सर पटक पटकर, भारत महासागर के तटबंधों पर जवाब है आपके पास इस प्रश्न का? अनुत्तरित परन्तु विचारणीय प्रश्न है। आज की परिस्थिति पर श्री देवीलाल सामर की नृत्य नाटिका 'पार्वती तपस्या' आज से 60 वर्ष पूर्व जो विद्याभवन में देखने को मिली थी अद्भुत थी, चिरन्तन है। उस कलागुरु के बचपन की स्मृतियां प्रकाशित कर उसे याद कर शब्द रंजन ने संस्कृति और कला का अनुपम उदाहरण दिया है। यूं तो सबही सामग्री उत्तम है यहां तक कि डॉ. तुक्तक भानावत का विज्ञापन 'हमारे पास शब्द-रंजन है अर्थ-रंजन नहीं' व्यंजना से परिपूर्ण। **-सागरमल बीजावत, अहमदाबाद**

'शब्द रंजन' सीमित संसाधनों के कारण भले ही पाक्षिक पत्र हो किंतु वह विचार एवं संवाद विषयक सार्थक सामग्री के कारण साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतना, जागरण एवं ज्ञानवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। 'स्मृतियों के शिखर' तथा 'स्मृति शेष' जैसे स्तंभों से लुप्त होते जा रहे संस्मरणों को संरक्षित किया जा सकेगा।

-मोहनस्वरूप भाटिया, मथुरा

'शब्द रंजन' लगातार मिल रहा है। संस्मरण लाजवाब होते हैं। सबसे पहले 'स्मृतियों के शिखर' ही पढ़ता हूं। भाषा की रवानी देखते ही बनती है जड़ों से जुड़ी हुई, मेवाड़ी की महक से लबरेज। **-माधव नागदा, लालमादड़ी**

संकीर्ण प्रादेशिक भावना एवं राजनैतिक कारणों से हिन्दी भाषा अभी तक प्रतिष्ठित नहीं हो सकी, जिसकी वह अधिकारिणी है परन्तु हिन्दी भाषा अपनी शक्ति एवं क्षमता के बल पर बहुद्देशीय भाषा का रूप ले रही है। भारत के बाहर करीब 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। **-सुधारानी श्रीवास्तव, जबलपुर**

पोषण सुधार के लिए सही समय पर सही प्रयास जरूरी

उदयपुर। भारत में कुपोषण दर पूरी दुनिया में सबसे अधिक है। हालांकि पिछले 15 वर्षों (1999-2014) में अवरुद्ध विकास (उम्र के हिसाब से कम लंबाई) की समस्या घट कर 51 प्रतिशत से 38.7 प्रतिशत रह गई है फिर भी देश के 4.5 करोड़ बच्चे अवरुद्ध विकास के शिकार हैं। इस समस्या के उन्मूलन का प्रयास इसी गति से करते रहे तो सफलता मिलने में लगभग 50 वर्ष लग जाएंगे। यह जानकारी अंतरा फाउंडेशन द्वारा सोमवार को होटल जस्ता राजपुताना में आयोजित पोषण के पहरेदार मीडिया बैठक में विशेषज्ञ प्रवक्ता डॉ. पवित्र मोहन, संस्थापक, बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज ट्रस्ट और डायरेक्टर, हेल्थ सर्विसेज, आजीविका ब्यूरो ने दी।

भारत में कुपोषण के 60 प्रतिशत मामले छह अल्प आय राज्यों (बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश) में पाए गए हैं। राजस्थान में 36.5 प्रतिशत बच्चों में अवरुद्ध विकास की समस्या है और 14.2 प्रतिशत बच्चों में लंबाई के हिसाब से वजन नहीं है। राज्य के जनजातीय बाहुल्य जिलों में कुपोषण अधिक चिंताजनक है।

डॉ. पवित्र मोहन ने बताया कि जहां तक कुपोषण का सवाल है यह जनजातीय समाज के बच्चों में अन्य सभी समाज से अधिक है। अवरुद्ध विकास (उम्र के हिसाब से कम लंबाई) और वेस्टिंग (लंबाई के हिसाब से कम वजन) की समस्या जनजातीय समाज के बच्चों में सबसे अधिक है। उन्होंने कहा कि दक्षिणी राजस्थान में जनजातीय लोगों की आबादी अधिक है। इनमें 61 प्रतिशत परिवार जनजातीय हैं। ये भील और मीणा समुदाय के हैं। इस क्षेत्र का औसत मानव विकास सूचकांक राजस्थान में सबसे कम, केवल 0.5 है। कुपोषण की सबसे अधिक मार दक्षिणी राजस्थान के जिलों जैसे डूंगरपुर और बांसवाड़ा पर पड़ी है। डूंगरपुर और बांसवाड़ा के 5 वर्ष से कम उम्र के क्रमश: 53.48 प्रतिशत और 58.67 प्रतिशत बच्चों की लंबाई उम्र के हिसाब से कम है।

डॉ. पवित्र मोहन ने बताया कि कुपोषण का एक अन्य रूप सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी कम चिंताजनक नहीं है। विटामिन ए, आयरन, आयोडीन, जिंक और फॉलिक एसीड जैसे माइक्रोन्युट्रिएंट की कमी कुपोषण की बड़ी वजह है। मां के स्वास्थ्य और बच्चे की वृद्धि, विकास और उसे जीवित रहने के लिए यह जरूरी है कि महिलाओं को पर्याप्त मात्रा में सूक्ष्म पोषक तत्व दिए जाएं चाहे उनकी उम्र गर्भवती होने योग्य हो या वे गर्भवती हों। बच्चों के लिए भी ये तत्व इतना ही जरूरी हैं। कुपोषण केवल खाने के अभाव से नहीं होता है। इसके कई कारण हैं जैसे आहार में पोषण, प्रोटीन और माइक्रोन्युट्रिएंट की कमी, बार-बार संक्रमण या बीमारी, बच्चे की देखभाल में कमी और स्तनपान का गलत तरीका, अपर्याप्त चिकित्सा, असुरक्षित पेयजल और स्वच्छता की कमी, वयस्क होने से पहले गर्भधारण, परिवार नियोजन का अभाव और समाज में महिला का दोयम दर्जा होना।

अंतरा फाउंडेशन के संस्थापक और निदेशक अशोक अलेक्जेंडर ने कहा कि कुपोषण की रोकथाम और उपचार आसान नहीं है। इस दिशा में किसी प्रयास की कई सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं हैं जैसे बेटा-बेटी में फर्क करना, सेवाओं का अभाव और सबके लिए सुलभ नहीं होना और फिर गरीबी। यह समस्या और चुनौतीपूर्ण हो जाती है जब हम लोगों में पोषण को लेकर जागरूकता का नितांत अभाव देखते है।

उन्हें पता ही नहीं है कि पोषण की सही मात्रा और सही गुणवत्ता बेहद जरूरी है। बच्चों का कुपोषण केवल मां-बाप के लिए रोकना कठिन है पर समाज, सार्वजनिक संगठन, व्यवसाय जगत और सरकारें हाथ बढ़ाए तो कुपोषण दूर किया जा सकता है और इसके लिए गर्भधारण से लेकर शुरू के 1000 दिन, यानी बच्चे के दूसरे जन्म दिन तक मां और बच्चे के पोषण पर खास ध्यान देने से बच्चों को पूरी जिन्दगी शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास का ठोस आधार मिलता है। उन्होंने बताया कि अंतरा फाउंडेशन का पोषण को लेकर बड़ा लक्ष्य रहा है। यह राजस्थान में पोषण पर ज्ञानवर्द्धन की कार्यशालाओं की पूरी शृंखला आयोजित कर रहा है। पोषण के पहरेदार नामक इस अभियान का मकसद कुपोषण संबंधी गलतफहमी दूर करने में मीडिया को मदद करना है। इससे लोग कुपोषण के कारण समझ पाएंगे। उनमें जागरूकता आएगी। रोकथाम की कारगर रणनीति बनेगी और इससे जुड़े लोग एकजुट होकर ठोस निर्णय ले पाएंगे और इसके लिए जिम्मेदारी भी निर्धारित हो पाएगी।

आजादी- 70 में मेडीकल छात्रों द्वारा स्लोगन लेखन

उदयपुर। 70वें स्वतंत्रता दिवस सप्ताह को तिरंगा और देशभक्ति दिवस के रूप में मनाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा आजादी-70 कार्यक्रम पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एमबीबीएस के विद्यार्थियों के लिए देशभक्ति से सम्बन्धित स्लोगन लेखन एवं गायन जैसी प्रतियोगिताएं रखी गईं। प्रतियोगिता में 100 से ज्यादा छात्र छात्राओं ने भाग लिया। स्लोगन लेखन एवं गायन में अश्पाक अली, प्रियल सुवालका, जलपित पटेल एवं पार्थवी उपाध्याय ने पुरस्कार प्राप्त किया।

पेसिफिक मेडिकल विवि के वाइस चॉसलर डॉ. डी. पी. अग्रवाल ने कहा कि जिस तरह से हमें अंग्रेजों से स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी दिलाई उसी तरह से हम अपने पेशे के प्रति वफादार रहेंगे तो ही हमारी स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर प्रिंसिपल एवं नियंत्रक डॉ. एस. एस. सुराणा, वाइस प्रिंसिपल डॉ. दिनेश भटनागर सहित सभी विभागाध्यक्ष एवं फैकल्टी मेम्बर भी उपस्थित थे।

काव्यपाठ के लिए अमेरिका आमंत्रित

प्रसिद्ध हिन्दी कवि चित्तौड़गढ़ के रमेश शर्मा, लखनऊ के सूर्यकुमार पांडे तथा मुंबई के आसकरण 'अटल' को अंतर्राष्ट्रीय हिंदी प्रचार समिति अमेरिका द्वारा 22 शहरों के 22 कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ के लिए आमंत्रित किया गया। इसके अंतर्गत बाल्टीमोर, रिचमण्ड, वाशिंगटन डीसी, इण्डियाना पोलिस, डलास, राले, ह्यूस्टन, कोलम्बस, शिकागो, डेटन, फिनिक्स, सिनसिनाटी, सेन हूजे, सेन फ्रांसिस्को, पिट्सबर्ग, न्यूयार्क, रोचस्टर, क्लीवलैण्ड, डेट्रोयर तथा नेस्वीले शहरों में काव्यपाठ किया। जोरदार प्रचार-प्रसार, टिकिट द्वारा प्रविष्टि किंतु श्रोताओं की संख्या अधिकतम 500 तथा न्यूनतम 50 तक रही। युवाओं में कविता के प्रति उत्साह कम देखा गया। प्रसन्नता यह रही कि हिन्दी के प्रचार के लिए कुछ स्थानों पर सांध्य कक्षाएं लगाई जाती हैं। कविता के नाम पर वहां चुटकलाबाजी में रुचि देखी गई। **-शिव 'मृदुल'**

खमतखामणा

तन स्यूं मन स्यूं चित्त स्यूं
आतम सुद्धि करां।
चौरासी लख जीव मिलै
वैर भाव सब हरां।।
एक कुटम परवार, सदाई करां कामणा।
ख म त खा म णा ख म त खा म णा।।

कान्यो मान्यो

तोत्या मोत्या की कहानी और दुपहरी का कलेवा

खेत पर काम कर रहे कान्यो ने चड़स हांकते मान्यो को दपरी करने के लिए आवाज दी। मान्यो बैल छोड़ खाने की पोटली लेकर पहुंचा। रुंख नीचे हवाखोरी करते दोनों ने हीरावण किया। अंगोठे में चलम दबाते कान्यो बोला, सामने वाले तालाब तीरे सनान सपाटा करते तीन छोरों को देख मुझे अपने बालपणे के गोठी की तोत्या मोत्या की कैवत याद आगई। तीन गोठी- 'तोत्यो, मोत्यो और हम। तोत्या गया मांगने, मोत्या गया मांगने और हम भी गया मांगने। तोत्या लाया आटा, मोत्या लाया आटा हम लाया कूगा। तोनों ने रोटी बनाई। तोत्या मोत्या की रोटी पक गई। हमारी जल गई तब आधी तोत्ये ने, आधी मोत्ये ने दी तो हमका पेट भरगया। इसी प्रकार तीनों नहाने गये। तोत्या मोत्या नहाकर निकल गये। हम डूब गये तब एक टांग तोत्ये ने, एक टांग मोत्ये ने पकड़ी तो हम निकल गये।'

मान्यो ने बड़ी गंभीरता से यह कहनी सुनी और कान्यो से बोला, मैंने भी इसे बहुत सुनी पर यह कैवत तब एक कान से सुन दूसरे से निकल जाया करती पर आज जब गहरे पानी पैठ सोचता हूं तो तीनों में कैसा संप, भाईचारा और अटूट दोस्ताना था। तीनों के शरीर तीन थे पर आतम एक था। आज तो एक तन जीव कई होते देखने को मिलते हैं। स्वारथ लोभ लालच छल कपट द्वेष के रहते दोस्त तो ठीक, सगे भाई भी एक नहीं रह पाते।

कान्यो बोला, अब तो कुछ कहने का जमाना भी नहीं रहा। सब कुछ देखते चलो। किसी को कुछ भी कहो मत। मान्यो बोला, वैसे भी कौन किसकी सुन रहा है। छोटे-छोटे छोरे तक बड़ों को कहते हैं, 'आप पुराने हो, अब सबकुछ नया है। आपका जमाना गया। अब तो हमारा जमाना देखो और हमारी इच्छा पूरी करो।'

डॉ. दिलीप धींग को अणुव्रत लेखक पुरस्कार

साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को वर्ष 2016 का अणुव्रत लेखक पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। पिछले दिनों गुवाहाटी (असम) में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 67वें अणुव्रत अधिवेशन के समापन समारोह में यह घोषणा की गई। अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली की ओर से उत्कृष्ट, नैतिक एवं आदर्श लेखन के लिए प्रतिवर्ष यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया जाता है।

महासमिति अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन के अनुसार सम्मान स्वरूप 51 हजार रुपये, प्रशस्ति-पत्र और शॉल प्रदान किये जाते हैं। डॉ. धींग पिछले तीन दशकों से निरन्तर हिन्दी गद्य-पद्य की विभिन्न विधाओं में श्रेष्ठ सृजन कर रहे हैं। विश्वविद्यालय स्वर्णपदक प्राप्त डॉ. धींग द्वारा लिखित-संपादित पाँच दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान, आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड, साहित्य मनीषी सम्मान, सेवारत्न सम्मान सहित अनेक सम्मानों से नवाजे जा चुके हैं।

हमारे पास
शब्द-रंजन है
अर्थ-रंजन नहीं
आपके पास जो भी है
कृपया सहयोग करें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur,

a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845,

a/c type- Current a/c)

-डॉ. तुक्तक भानावत, मो. 9414165391

आगरा विश्वविद्यालय की प्रो. इन्दु जोशी के साथ डॉ. कहानी भानावत शब्द रंजन कार्यालय में। डॉ. जोशी सुखाड़िया विश्वविद्यालय में डॉ. कहानी के निर्देशन में शोधरत हंसलता चौहान की पीएच.डी. मौखिकी में आई थीं।

निर्मल धाकड़ तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की साधारण सभा की वार्षिक बैठक होटल लजीज अफेयर में सम्पन्न हुई। प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि बैठक में सर्वसम्मति से वर्ष 2016-17 के लिए सीए निर्मल धाकड़ अध्यक्ष निर्वाचित किये गए। अपने उद्बोधन में निर्मल धाकड़ ने कहा कि आगामी वर्ष में खासतौर पर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा पर ध्यान दिया जाएगा। वर्ष भर शिविर लगाकर चिकित्सा सुविधा, विद्यार्थियों के लिए केरियर गाइडेंस, रोजगार की उपलब्धता आदि पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

बैठक में निवर्तमान अध्यक्ष बी.पी. जैन ने स्वागत करते हुए पिछले वर्ष के कार्यकलापों पर प्रकाश डाला। सचिव मुकेश बोहरा ने वर्षभर की गतिविधियों की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष सी.एस. नैनावटी ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। बैठक में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल के डॉ. कीर्ति जैन, इन्दिरा इन्फर्टीलिटी के डॉ. अजय मुर्डिया, यूरोलोजिस्ट डॉ. अर्जुन बाबेल, डॉ. रणवीर नैनावटी, डी.पी. धाकड़ आदि ने अपनी विशेष उपस्थिति देते हुए विचार व्यक्त किये।

हिन्दुस्तान जिंक क्लब द्वारा पशु चिकित्सालय को उपकरण भेंट

उदयपुर। पूर्व सांसद एवं हिन्दुस्तान जिंक के प्रबुद्ध नेता भेरूलाल मीणा की स्मृति में उदयपुर के बहुउद्देशीय पशु चिकित्साल, को हिन्दुस्तान जिंक क्लब द्वारा एक लाख दस हजार रुपये की 100 एम.ए. क्षमता की पोर्टेबल एक्स-रे मशीन तथा बी. चौधरी, एन. के. भट्ट, हेमराज लौहार एवं डालचन्द सांखला की स्मृति में एक लाख सात हजार रुपये के सर्जिकल उपकरण भेंट किये गये। इसका लाभ अपंग एवं नि:शक्त पशुओं को मौके पर ले जाकर पोर्टेबल एक्स-रे मशीन द्वारा जांच के साथ ही आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र तथा निकटवर्ती जिलों एवं राज्यों से आने वाले पशुपालकों को भी मिलेगा। इस अवसर पर क्लब के अध्यक्ष एम.के. दीक्षित, जिंक के केन्द्रीय कार्यालय श्रमिक संघ के महामंत्री मदनेश लोढ़ा, उपाध्यक्ष पंकज शर्मा, संगठन सचिव एवं क्लब प्रवक्ता नारायणलाल शर्मा, दिलीप शर्मा, अशोक तम्बोली अध्यक्ष इण्टक एवं अन्य सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में पशुपालन विभाग की ओर से उपनिदेशक डॉ. ललित जोशी, डॉ. बी.एल. दशोरा, डॉ. भूपेन्द्र भारद्वाज, डॉ. शरद अरोड़ा, डॉ. नेरन्द्रसिंह झाला, डॉ. सी.एस. भटनागर, डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी, डॉ. दिनेश सारडा, डॉ. शक्तिसिंह, डॉ. अनुपमा दीक्षित, डॉ. महेन्द्र मेहता एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

कैंसर शील्ड प्लान की शुरूआत

उदयपुर। बिड़ला सन लाईफ इंशोरेंस (बीएसएलआई) जो आदित्य बिड़ला वित्तीय सेवा समूह (एबीएफएसजी) की जीवन बीमा का खंड है तथा एक प्रमुख गैर-बैंकिंग वित्तीय सेवाओं की कंपनी है ने बीएसएलआई कैंसर शील्ड प्लान की शुरुआत की घोषणा की है। यह प्लान जरूरत के समय कैंसर से संघर्ष के वक्त परिवार को वित्तीय सुरक्षा का आश्वासन प्रदान करने में मददगार है। पंकज राजदान, एमडी सी.ई.ओ, बिड़ला सन लाईफ इंशोरेंस ने बताया कि कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं और भारत में उनका रुझान भी वृद्धि की ओर है। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार भारत में कैंसर से प्रत्येक वर्ष करीब 6.8 लाख लोग मर जाते हैं। यद्यपि नई तकनीक व दवाइयों की शोध के साथ चिकित्सा विज्ञान में प्रगति हुई है, जिससे इस बीमारी के इलाज का प्रबंधन किया जा सके, लेकिन फिर भी उपचार का खर्च बेहिसाब रहता है और कैंसर से पीड़ित अधिकांश मरीजों के लिए वह वहनीय नहीं होता है।

उन्होंने बताया कि कैंसर के प्रभाव केवल शारीरिक रूप में ही नहीं, बल्कि परिवार के भावनात्मक व वित्तीय रूप में भी रहते हैं, जिससे वित्त व नियमित खर्च अव्यवस्थित हो जाते हैं। बीएसएलआई ब्रांड के कैंसर शील्ड प्लान के प्रस्ताव के माध्यम से हमारा उद्देश्य समाधान के साथ ग्राहकों को सशक्त करना है, जिससे वे कैंसर होने की संभावना के साथ वित्तीय योजना बना सकें। बीएसएलआई कैंसर शील्ड प्लान में कैंसर के आरंभिक व गंभीर चरण दोनों ही सम्मिलित हैं और निदान पर ही एकमुश्त रकम उपलब्ध होती है, जिससे संबंधित खर्चों व आनेवाली वित्तीय जवाबदारियों के खर्चों के निपटान में मदद मिलती है। ग्राहक को सम एश्योर्ड की 30 प्रतिशत राशि कैंसर के आरंभिक चरण के निदान पर उपलब्ध कराई जाती है तथा गंभीर चरण के निदान के समय आरंभिक चरण के निदान पर भुगतान की गई राशि को छोड़ शेष राशि उपलब्ध कराई जाती है।

पोथीखाना

सदाबहार नदी है वो

-डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर-

अब कम सुनाई पड़ता है कि आजकल कहानियों का मौसम है। कहानी आंदोलन का पानी उतर चुका है और अब सदाबहार नदी निर्मल होकर शांत बह रही है। डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी ने इस समय का बड़ी चतुराई से मौके का लाभ उठाया है और अपनी सत्रह कहानियों का गुलदस्ता चुपचाप पेश कर दिया है अपने पाठकों और उनके जानकारों के लिए।

आज ऐसा माहौल बन पड़ा है कि ज्यादातर प्रोफेसर और पत्रकार संपादकों ने साहित्य के कर्म-क्षेत्र को पूरी मुस्तेदी से संभाल लिया है। बेचारा लेखक कहानी का पात्र बना मौन बैठया खड़ा है परन्तु ऐसा कतई नहीं है कि उनमें कलम के सिपाही नहीं बन सकें। डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी उनमें से एक कलमकार हैं जो अपने शब्दानुशासन और अनुभवों में डूबे ख्यालात को एक कुशल कारीगर की तरह श्रोता या पाठक को सम्मोहित करने की सामर्थ्य रखते हैं।

हम अपनी यह यात्रा 'सांझ का संबल' से शुरू करते हैं। डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी कहानी की नब्ज टटोलते हुए सोचकर कहलाने लगते हैं अपने पात्र के जरिये कि आज की आपाधापी और उलझनों से भरी जिंदगी में हम निकट के प्रियजन से भी मनचाहे संबंध निभा पाते हैं और यह भी क्या कम विडम्बना है कि आज किसी के यहां कभी कोई अहेतुक भाव से पहुंच भी जाता है तो लोग उसमें कोई न कोई विशेष प्रयोजन अथवा स्वार्थ-गंध सूंघने की कोशिश करते हैं। आत्मीयता, हार्दिकता, सामाजिकता सब अब अर्थहीन व्यापार मात्र रह गये हैं।

इस कहानी की यह भूमिका सी दिखने वाली उग्र उष्णता एकबार तो पाठक का मन मोड़ने के लिए तत्पर नजर आती है, परन्तु थोड़ा आगे चलकर लिखा स्वत: ही सुनाई पड़ते हुए अनुभव होने लगता है कि कहानी उसके साथ चलना चाहती है। वह दार्शनिकता का पुट डालकर मन:स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए आगे बढ़ने लगती है तभी एक ऐसा नाटकीय हरलका लगता है कि श्रोता-पाठक के पास से खिसक कर वह उसकी आत्मा में उतरने लगती है। वहां से प्रो. रमेशचंद्र शाह के चार्ल्स लैम्ब कन्नी काट जाते हैं और यह सहज समझ में आने लगता है। इसीलिए वाजपेयीजी की मृत्यु के समाचार से मन पर छाया वह अवसाद-भार, सच-विशेष घनीभूत नहीं हुआ। इस तरह कहानी बचकर लंबी उमर पा जाती है।

'अहसास' कहानी उन दो प्रेमियों की है, जो जवानी में एक नहीं हो सके लेकिन अधेड़ अवस्था में उनका ऐसा पुनर्मिलन हुआ कि वे दोनों विवाह बंधन में बंध गये। प्रेमी दुर्घटनाग्रस्त होकर अपंग हो जाता है और प्रेमिका उसकी पत्नी बनकर धन्य। निश्छल प्रेम में भोग नहीं, त्याग की भावना जोर पकड़ती है। यह एक दिल हिलाने वाली भावपूर्ण गाथा है। प्रेम की अपूर्व उत्कटता। इसी के समानान्तर एक दूसरी कहानी है 'श्रद्धा-अश्रद्धा'। उसमें श्रद्धा अर्थात् सुनीता का सारा दृष्टिकोण अपनी महत्वाकांक्षा के केन्द्र तक सीमित है। उसे परिवार की चिंता नहीं। यह कहानी आज के नारी जीवन का जीवंत चरित्र उकेरती है।

डॉ. सत्येन्द्र नैतिक और समर्पित जीवन के रचनाकार हैं। बुढ़ापा नई पीढ़ी का सिर दर्द बन रहा है। फिर बुढ़ापा अपने मां-बाप का हो या बाहर का। झा साहब 'अब मेरा कोई इंतजार नहीं करता' में पत्नी के गुजर जाने के बाद अपने को नितांत अकेला, बेकार और बेमतलब इंसान के रूप में देखते हैं। जब पत्नी की याद घेरने लगती है, तब उनकी आंखें डबडबा आती हैं। ऐसा नहीं है कि उनका पुत्र और पुत्रवधू नहीं हैं। हैं तो पर अपने में अति व्यस्त। ऐसा लगता है कि वे निर्जन टापू की कसकती याद लिए उड़ते एकाकी पक्षी को देखकर अपनी ढबढबाई करूणा को नहीं रोक पा रहे हैं। यों यह कहानी ह्रदय को उद्वेलित कर उठती है।

जहां-तहां डॉ. सत्येन्द्र की कहानियां कविता करती नजर आती हैं। 'मम्मी आपके रंग लगा दूं' कहानी में ऐसे अनेक स्थल हैं। हों क्यों न, इस कहानी की नायिका निवेदिता स्वयं कवयित्री है। विधवा अलग हैं। उसके साथ उसका नन्हा अंशु है। होली आती है। चारों ओर रंगों की बहार है। नन्हा अंशु किसके रंग लगाये। उसकी रंग लगाने की इच्छा बलवती हो उठती है और वह अपनी मां से कहने लगता है- 'मम्मी आपके रंग लगादूं।' निवेदिता अपने को रोक नहीं पाती और अंशु से रंग लगाकर निहाल हो जाती है। उसे भुवन के साथ खेली होली टीस उठती है। यह मनोवैज्ञानिक कहानी है और बेजोड़ है।

'अपनी पम्मी के लिए' में ऐसे दो प्रेमी हैं, जिनमें प्रेमी को अपनी प्रेमिका के प्यार का आखिर तक पता नहीं चलता। पम्मी की मृत्यु हो जाने पर मिले पत्र से उसके 'इकतरफा' प्रेम का पता चलता है तो वह अपने को संभाल नहीं पाता और पछताव से घिरा वह कह बैठता है - 'क्या अंतिम क्षण तक मैं कभी अपने को क्षमा कर सकूं?' ये वाक्य कहानी के मर्म को विगलित कर डालते हैं।

डॉ. सत्येन्द्र 'यों पागल मवुआ पुकारे' में चुटकी भरते हैं। विवाह में धोखे की रचना कहानी का रूप देते हैं। 'काबेरी' घर पर काम करने वाली पतिव्रता नारी की करूण कहानी है। उसका पति शराबी है और दुश्चरित्र भी। एक दिन वह दूसरी औरत को घर ले आता है। यहां तक कहानी अंतर्मन को कुरेदती है और पाठक में उत्सुकता भी पैदा करती है परंतु उसका अंत कुएं में कूदवा देने से पाठक बिखरने सा लगता है। यह नहीं है कि ऐसा नहीं हो सकता है। हुआ भी है परंतु पाठक की कहानीकार से अपेक्षा रहती है कि कहानी में यथार्थ संभावना रहे, विकराल और अंधा यथार्थ नहीं।

यहां मैंने डॉ. सत्येन्द्र की इन कहानियों में से अलग-अलग विषय और क्षेत्र की कहानियों का संविश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनसे मुझे यह निष्कर्ष निकालने में सहूलियत रही है कि उनकी कहानियों में कहीं आदर्श का यथार्थ नजर आता है और कहीं यथार्थ में आदर्श। उन पर सजग और विख्यात समालोचक और निबंधकार हावी नहीं हो सका है और आवश्यकता पड़ने पर उसने उस रूप से कहानी की मदद ही की है।

कहीं-कहीं कहानीकार ने कहानी में व्यावहारिक दार्शनिकता का पुट देकर कहानी पर काजल का टीका लगाने में कोताही नहीं बरती है। इनमें द्वन्द्वात्मकता स्वाभाविक है। संवेदना कहानी के मर्म के जख्म पर मरहम लगाती है। करूणा उसे प्यार से थपथपाती है और सच्चाई उसे समर्पण देती है। जिज्ञासा कहानी का संवाद है। इनसे मिलकर जो ढांचा तैयार हुआ है वह उनके शिल्प का हुनर है।

लगभग सभी ऐसी विशेषता उनकी कहानियों में न्यूनाधिक मिलती है। उन्होंने कहीं, कहानियों ने उन्हें कहीं-कहीं छेड़ा है, यह भी आभास हुआ है। वास्तव में छेड़छाड़ के बिना कहानी बन नहीं पाती और ऐसे ही स्थलों पर शिल्प की कारीगरी अपना हुनर दिखाती है। उसी से दूसरे के ह्रदय को कुरेदने का अवसर मिलता है। करूणा-संवेदना एक होकर भूली-बिसरी यादों में ऐसे उतर कर घुलमिल जाती है कि उनका पाठक उन्हें भूलना चाह कर भी नहीं भूल पाता। इन कहानियों में कुछेक कहानियां ऐसी हैं और किसी कहानीकार को ऐसी कहानियां लंबी उम्र बख्शाती है।

अमन प्रकाशन, 104 ए / 80 सी, रामबाग, कानपुर से प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य 225 रूपये है।

गद्य के समृद्ध अनुभवों से उपजी कविता

-सवाईसिंह शेखावत-

'मैं शब्दों का कुंभकार' शीर्षक से वरिष्ठ कथाकार माधव नागदा का पहला कविता संग्रह आया है। इससे पूर्व उनके चार कहानी संग्रह, दो लघुकथा संग्रह तथा डायरी विधा में भी एक किताब प्रकाशित हो चुकी है। ऐसे में गद्य के सघन-समृद्ध अनुभवों के बाद किसी साहित्यकार के पहले संग्रह से गुजरना अपनेआप में एक विरल अनुभव है। प्राय: लोग पद्य से गद्य की ओर आते हैं लेकिन माधव नागदा गद्य से पद्य की ओर मुखरित हैं। यह उनकी संवेदनात्मक सृजनशीलता का प्रमाण है।

गद्यकार चूंकि जीवन के ठोस और व्यावहारिक मुद्दों पर अधिक एकाग्र होता है। अत: वह खूबी यहां भी देखने को मिलती है। माधव नागदा की इन कविताओं में शहरी जीवन की छीजती संवेदनाएं, गांव-गांव की माटी से जुड़े लोग, बर्तन बनाता कुम्हार, गोबर थापती युवती, किसान-मजदूर, खेत-खलिहान, नदी-जंगल, पलाश, झाड़-झंखाड़, नोन, तेल, लकड़ी सब समाहित हैं। वह जहां शहरों में उग आए कंक्रीट के घने जंगल से परेशान है वहीं गांव और उसकी संवेदनात्मक सामर्थ्य को बचाए रखकर बेहतर दुनिया को बनाने-बचाने का स्वप्न भी देखता है।

संग्रह का आगाज ही एक ऐसी कविता से होता है जो पेड़ के जरिए प्रेम और प्रेम के मार्फत पेड़ बचाने की अपील करती है। यह संवेदनात्मक ज्ञान से पर्यावरण बचाने और पर्यावरण से संवेदना तंत्र को सुरक्षित रखने के आगे की बात है जहां कवि कहता है- 'लकड़हारों को / कहां सुहाती है कविता / कहां सुहाता है उन्हें / लोगों का मिलना -जुलना / प्रेम से बोलना-बतियाना / भयभीत करती रहती है उन्हें / कविता के पत्तों की खड़खड़ाहट / इसीलिए तो घूम रहे हैं वे / हाथ में कुल्हाड़ी लिए / हिंसक शब्दों के हत्थे वाली / बचाना है हमें कविता को / इन क्रूर लकड़हारों से / ताकि निर्भीक हो / बैठ सकें हम / इसकी छांव में / ताकि बचा रहे / आपस का प्रेम।'

कवि को इस बात पर पूरा भरोसा है कि यह काम केवल कवि ही कर सकता है। मनुष्य के भाव-जगत, उसके संवेदन तंत्र को बचाने की जिम्मेदारी कवि पर है जैसा कि आचार्य शुक्ल ने कहा था- मनुष्य भाव की रक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। कवि दिन-ब-दिन पत्थर दिल होते शहर की फिजां से परेशान है। उद्यमियों, बिल्डरों और मस्ती के लिए उमड़ते सैलानियों से वह डर जाता है कि शहर कहीं अपने कवि को, संवेदना के संरक्षक को न भुलादे।

'संवेदना का शहर' शीर्षक कविता में वह कह उठता है - 'उजाड़ दिया उन्होंने / हराभरा संवेदनाओं का शहर / और बो दिये पत्थर / देखते ही देखते उग आया / कंक्रीट का घना जंगल।' नागरिकता के बोझ तले दबे समय में भी वह अपने गांव के बारे में सोचता है- 'कभी-कभी सोचता हूं / माटी का कवि है सवाबा / और मैं शब्दों का कुम्भकार।'

मामूली चीजों से गैर मामूली कविताएं रचते और जीवन की उम्मीद से लबरेज इस कवि के यहां आज भी गोबर थापती सांवली युवती है जो खुशबू के झोंके की तरह गुजरी मेम को देखकर गोबर में लकीरें मांडने लगती हैं और वहां मेंहदी के रचाव जैसी फूल-पत्तियां उग आती हैं। वह पढ़ने की उम्र में पिता की निभाते और चाय बेचते उस लड़के का नोटिस लेता है जो ग्राहकों को लुभाने के लिए तरह-तरह की आवाजें निकालता है। वह उस पति की पीड़ा को भी याद रखता है जो पत्नी की आंखों में भिंडी, बैंगन और टमाटर की तरह उग आए प्रश्नों से खिसियाकर रोमांटिक कविता गुनगुनाते का जतन तो करता है पर उसका गला भर्रा जाता है और उसे लगता है जैसे कोई शोक गीत गा रहा हो।

माधव नागदा का कवि चिड़िया जैसे मामूली पक्षी के प्रतिरोध को दर्ज करता है। कक्षा की सबसे होशियार सुगना की सुध लेता है। औरतों में बचे चिड़ियापन को बचाने का जतन करता है। किटकिटाती ठंड में महज कुर्ता और घुटनों तक धोती पहने पेमा काका के श्रम और उम्मीद को फलवती बनाता है। 'करलो दुनिया मुट्ठी में' के दौर में भी वह जमीन पर पैर टिकाए रखने की फिक्र करता है।

पचपन की उम्र में बचपन को याद करने और कौन बना रहा है नर्क, घाटी के स्वर्ग को प्रश्न से मुठभेड़ करता है। गिरिराज नंदवाना की याद और लालमादड़ी के किसान जैसी कविताएं उसकी जनपदीय चेतना और लोकसंघर्ष को मुखरित करने के संकल्प को दर्शाती हैं। हिमांशु पब्लिकेशंस, उदयपुर से प्रकाशित इस कृति का मूल्य 200 रूपये है।

खड़े रहते हैं घर

-डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ-

घर की चीजों को लेकर कवयित्री ने बहुत अच्छी कविता लिखी है- 'कितना कुछ कहती हैं चीजें घर की / बिना कुछ बोले भी चुप नहीं रहती हैं चीजें घर की'

घर की चीजों से गृहणी का कितना लगाव हो जाता है कि उनके चले जाने पर भी वे मन से नहीं निकलती हैं। जब आंखों में आ खड़ी होतीं अपना इतिहास छोड़ जाती हैं। वे लिखती हैं- 'विश्व में कभी भी अलग थे न होते हैं घर, इंसान और चीजें घर की।'

मालती शर्मा लोकरीतियों और उनकी परंपराओं की सुधी ज्ञाता हैं। सोलह संस्कारों के साथ बेटी की विदाई और वधू का आगमन है तो घर घर है। कवयित्री ने घर के विषय में कोई कोना अछूता नहीं छोड़ा है। इन कविताओं में दर्द तो है ही वस्तुस्थिति की जांच-पड़ताल भी है। आज घर की जो स्थिति बन गई है उसकी पीड़ा भी इन कविताओं में प्रकट हुई है। 'दीप अंजोटती है लोक परम्परा' शीर्षक कविता में उन्होंने बहुत बड़ी बात कह दी है। इसे परिभाषित भी किया है- (1) मैं परम्परा हूं घर-परिवार, समाज और विश्व की (2) अतीत और वर्तमान के दो किनारों के बीच बहता मेरा जल प्रवाह है। मुझे तो उनके पूरे संग्रह में ब्रज की सौंधी सुगंध आती है। इसीलिए मालती शर्मा कवयित्री के रूप में मुझे बहुत अधिक भाती हैं अर्थात् प्रभावित करती हैं।

रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं : सारंगदेवोत

विद्यापीठ विश्वविद्यालय आदिवासी अंचलों में सर्वाइकल कैंसर व रक्तदान शिविर लगाएगा, रक्तदान रथ लोकार्पित

उदयपुर। स्वेच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने एवं सरल ब्लड बैंक का रिप्लेसमेंट फ्री रक्त उपलब्ध करवाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, लायंस क्लब उदयपुर अमन एवं सोसायटी, सरल ब्लड बैंक एवं श्रीमती सरला सिंघवी चैरिटेबल सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में निर्मित रक्तदान रथ का लोकार्पण राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, लायंस क्लब्स अंतरराष्ट्रीय के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अशोक मेहता, ड्रग्स कन्ट्रोलर ऑफ राजस्थान अजय फाटक, आर.एस.बी.टी.सी. के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. एस.एस. चौहान, लायंस प्रान्तपाल अरविन्द चतुर, श्याम एस. सिंघवी, संयम सिंघवी एवं अतिथियों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने व शहरवासियों में जागरूकता का संदेश देने विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि व गणमान्यजन 100 से अधिक कारों में रैली के रूप में भूपालपुरा स्थित सरल ब्लड बैंक परिसर से रवाना हुए तथा शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय परिसर में पहुंचे। मौके पर ही सरल रक्तदान रथ में 45 लोगों ने रक्तदान किया। विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल में आयोजित समारोह में डॉक्यूमेंटरी फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो.एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि विद्यापीठ विश्वविद्यालय सामाजिक सरोकारों में हमेशा अग्रणी रहा है। इसी कड़ी में मेवाड़ के आदिवासी अंचलों तथा विद्यापीठ के सामुदायिक केन्द्रों पर रक्तदान शिविर, महिलाओं में होने वाले सर्वाइकल कैंसर की जांच तथा उपचार की सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं हो सकता है। सरल ब्लड बैंक के साथ विश्वविद्यालय ने एक एमओयू पर भी हस्ताक्षर किए जिसके तहत प्रतिवर्ष विद्यापीठ विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों तथा विद्यार्थियों की ओर से 2 हजार यूनिट रक्त उपलब्ध करवाया जाएगा।

लायंस क्लब्स अंतरराष्ट्रीय के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अशोक मेहता ने कहा कि किसी की जिन्दगी बचाना मानवीय जीवन का सबसे बड़ा कार्य है। युवाओं को इस अभियान में बढ़-चढ़कर भागीदारी करनी चाहिए। ड्रग्स कन्ट्रोलर ऑफ राजस्थान अजय फाटक ने कहा कि रक्तदान से जीवन तो बचाया ही जा सकता है मगर उसे नई दिशा भी दी जा सकती है। इस मौके पर आर.एस.बी.टी.सी. के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. एस.एस. चौहान, लायंस प्रान्तपाल अरविन्द चतुर, श्याम एस. सिंघवी, संयम सिंघवी, लॉयन बलिदान जैन व लॉयन अमित बाहेती ने भी विचार व्यक्त किए।

नौनिहालों के लिए शुरू हुआ 'चहक'

उदयपुर। जरूरतमन्द बच्चों तक उपयोगी सामग्री की पहुंच सुनिश्चित कर उनके भविष्य को निखारने के लिए 'चहक' अभियान नाम से एक अनूठी एवं महत्वाकांक्षी पहल का श्रीगणेश हुआ। इसके अन्तर्गत नई-पुरानी सामग्री को एक स्थान पर जमा करने की सुविधा आरंभ की गई है जहां से सरकारी स्कूलों के जरूरतमन्द विद्यार्थियों तक इन्हें पहुंचाया जाएगा।

जिला प्रशासन एवं उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि. के माध्यम से आकार लेने वाले 'चहक' अभियान की शुरूआत शास्त्री सर्कल स्थित उपभोक्ता थोक भण्डार के सुपर मार्केट में आयोजित समारोह में हुई जहां जिला कलक्टर रोहित गुप्ता, जिला प्रमुख शान्तिलाल मेघवाल एवं गिर्वा की उपखण्ड अधिकारी श्रीमती नम्रता वृष्णि ने चहक काउंटर का उद्घाटन किया। भण्डार के प्रशासक राजेन्द्र भट्ट ने बताया कि जरूरतमंद विद्यार्थियों के चेहरों पर मुस्कान लौटाने के लिये नागरिकों के घरों मे पड़ी अनुपयोगी सामग्री जैसे लंच बोक्स, वाटर बोटल, जोमेट्री बोक्स, खाली कापियां, खाली रजिस्टर, स्कूल बेग व बच्चों के खिलौने आदि सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुंचाया जाकर अनुपयोगी सामग्री को उपयोगी बनाने के लिए सुपरमार्केट में एक काउन्टर स्थापित किया गया है। महाप्रबन्धक आशुतोष भट्ट ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि शहरवासी यह सामग्री शास्त्री सर्कल स्थित सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार के सुपरमार्केट पर प्रातः 10 से शाम 5 बजे तक जमा करा सकते हैं।

वोडाफोन पर 72 घण्टे तक नॉन-स्टॉप रेडियो अभियान

उदयपुर। वोडाफोन सुपरनेट की घोषणा का जश्न मनाने के लिए देश के प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाता वोडाफोन इण्डिया ने राजस्थान के निवासियों के साथ जुड़ने के लिए एक अनूठी पहल की है। वोडाफोन राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि इस अनोखे अभियान के तहत वोडाफोन ने राजस्थान के 5 शहरों में एक लोकप्रिय निजी एफएम स्टेशन की साझेदारी में 72 घण्टे के नॉन-स्टॉप लाईव शो का आयोजन किया जिसकी मेजबानी 5 रेडियो जॉकी द्वारा की गई। इसमें श्रोताओं के साथ अपनी बातों को लगातार जारी रखते हुए वोडाफोन सुपरनेट पर लगातार बातें चलती रहे के संदेश को प्रसारित किया।

अमित बेदी ने कहा कि श्रोताओं के साथ लगातार जुड़े रहने का यह अभियान उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, कोटा, अजमेर एवं आसपास के क्षेत्रों के निवासियों के बीच बेहद लोकप्रिय हुआ, जिन्होंने पूरे उत्साह के साथ इस प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और लगातार 72 घण्टे रेडियो जॉकी के साथ जुड़े रहे। उन्होंने कहा कि वोडाफोन इस वादे के साथ अपने 360 डिग्री अभियान वोडाफोन सुपरनेट का लॉन्च किया कि 'बातें कभी रुकनी नहीं चाहिए।' इस अभियान को देशभर में टेलीविजन, रेडियो, सोशल मीडिया, आउटडोर और प्रिन्ट के माध्यम से प्रसारित किया गया है। एक महीने के दौरान वोडाफोन ने देशभर में अपने उपभोक्ताओं के साथ अनूठे तरीके से फ्रैंडशिप डे, स्वतन्त्रता दिवस और रक्षाबंधन का त्योहार मनाया।

अशोभनीय टिप्पणी पर सकल जैन समाज का विरोध

उदयपुर। क्रंतिकारी राष्ट्रीय सन्त तरूणसागरजी महराज पर संगीत निर्देशक विशाल ददलानी, राजनीतिक विश्लेषक तहसीन पूनावाला द्वारा अभद्र एवं अशोभनीय टिप्पणी के विरोध में उदयपुर में सकल जैन समाज द्वारा हाथों पर हाथों पर काली पट्टी बांध विशाल रैली निकाली गई। टाउन हॉल से प्रारंभ हुई रैली कलेक्ट्री पहुंच धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। रैली को संबोधित करते हुए आचार्यश्री विमद सागरजी महाराज ने कहा कि नग्न होना और दिगम्बर होना अलग बात है। नंगा तो व्यक्ति बाथरूम में भी होता है, लेकिन वह दिगम्बर नहीं कहलाता। दिगम्बर साधु जब दिगम्बर बनता है तो हजारों लोगों की उपस्थिति में वह अपने कपड़े उतार समस्त सांसारिक वृत्तियों का त्याग करने का संकल्प लेता है। पैदल विहार करता है। एक समय आहार करता है तथा समस्त परिग्रहों का त्याग कर मयूर पिच्छिका एवं कमण्डल ही अपने पास रखता है। आचार्यश्री ने कहा कि पानी जब मर्यादा तोड़ता है तो सिर्फ विनाश होता है लेकिन वाणी जब मर्यादा तोड़ती है तो सर्वविनाश हो जाता है। बन्दूक से निकली गोली लगने का घाव तो भर जाता है लेकिन मुंह से निकली कड़वी बोली का घाव नहीं भर पाता। मुनिश्री तरूणसागरजी पर की गई टिप्पणी से सम्पूर्ण समाज का अपमान हुआ है।

यूसीवेब ने लाँच किया नया यूसी ब्राउजर

उदयपुर। अलीबाबा मोबाइल बिजनेस ग्रुप की कंपनी यूसीवेब इंक ने अपना नया यूसी ब्राउजर लाँच किया है। कंपनी ने कलर्स टीवी के साथ कंटेंट संबंधी महत्वपूर्ण साझेदारी का भी ऐलान किया है। बिग-डेटा तकनीक से संचालित नए यूसी ब्राउजर पर यूसी न्यूज से सीधे न्यूजफीड्स लेने की सुविधा है जो यूजर्स के लिए ज्यादा कस्टमाइजेशन विकल्पों के साथ अब यूसी ब्राउजर का अभिन्न हिस्सा बन गया है।

अलीबाबा मोबाइल बिजनेस ग्रुप के प्रेसिडेंट-विदेशी व्यवसाय जैक हुआंग ने कहा कि कलर्स टीवी के साथ इसके कुछ शो के लिए यह साझेदारी मोबाइल पर मनोरंजन के कंटेंट को डिजिटाइज करने की अलीबाबा मोबाइल बिजनेस ग्रुप की रणनीति को मजबूत करती है। यूसीवेब एक मोबाइल ब्राउजर से विकसित होकर एक मोबाइल मीडिया एसेट कंपनी बन गई है। यह समूचे विश्व में लगभग 420 मिलियन से अधिक मासिक सक्रिय यूजर्स (एमएयूज) को मोबाइल सर्च और न्यूजफीड सेवा मुहैया करती है।

आज यूसी ब्राउजर भारत और इंडोनेशिया में पहले दर्जे का स्वतंत्र ब्राउजर है और स्टैटकाउंटर के अनुसार दुनिया के शीर्ष 3 मोबाइल ब्राउजर्स में इसकी गिनती होती है। वित्त वर्ष 2016-17 की पहली तिमाही के लिए अलीबाबा ग्रुप के आर्थिक नतीजों में यूसीवेब ने डिजिटल मीडिया और मनोरंजन श्रेणी में कंपनी की प्रतिसपर्धी हैसियत मजबूत करके महत्वपूर्ण हिस्सेदारी की है।

जैक हुआंग ने कहा कि 420 मिलियन एमएयूज तक पहुँचने की हमारी उपलब्धि के बाद हम ट्विटर और इंस्टाग्राम की बराबरी में आ गए हैं। भारत में सफलता के बाद आने वाले वर्षों में हमारा इरादा धरती की आधी आबादी को अपनी सेवा मुहैया कराना है। हमारा मुख्य ध्यान ग्लोकलाइजेशन पर है जिसका लक्ष्य है हर देश में स्थानीय समाधान पेश करते हुए विश्वव्यापी बनना। हमें विश्वास है कि इस रणनीति की बदौलत हम एक नए डिजिटल युग, यानी जीयूएफ- गूगल, यूसीवेब और फेसबुक में प्रवेश करेंगे।

यूसीवेब इंडिया के महाप्रबंधक, रॉबर्ट ब्यू ने कहा कि कलर्स के साथ हमारी साझेदारी अपने तरह से बिल्कूल अनूठी है। इस साझेदारी के द्वारा विविध प्लेटफॉर्मों के माध्यम से कलर्स टीवी पर ब्लॉग और सीन्स के पीछे के वीडियो दृष्य जैसे कंटेंट के लिए दीर्घकालीन रिश्ता बनाने और इन्हें मजबूत बनाने का इरादा है।

यूसी ब्राउजर डिजिटाइज्ड एन्टरटेनमेंट का समाधान पेश कर रहा है। कलर्स टीवी के सीईओ, राज नायक ने कहा कि गठबंधन केवल दिखाने के लिए नहीं होते। कभी-कभी ग्राहकों को सर्वश्रेष्ठ यूजर अनुभव और बेहतर दर्शक अहसास कराने के लिए भी गठबंधन किए जाते हैं। कलर्स हमेशा से अपने उपभोक्ताओं की जरूरतें पूरी करने वाला व्यवसाय करने में विश्वास करता रहा है। आजकल हमारे अधिकांश दर्शक मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं और इस तरह हम यूसी ब्राउजर जैसे लोकप्रिय मोबाइल ब्राउजर के साथ तालमेल बिठा सकते हैं।

पानी की फसल

-मालती शर्मा-

अँट गए तालाब और पट गए कुए
हाथी से चींटी तक के लिए पानी
बतलाओ धरती मां किसमें भरें ?
आओ हम सब खूब सारे बर्तन दें।
नल, टंकी, सूखे अंधे कुए
भरे-भरे हो सकें
पोखर तालाब कुंड बावड़ियां
वर्षा का पानी यूं ही ना बहे।
एक गांव दो तालाब की अलख जगे
घर-घर में पानी की फसल उगे।।

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।